बिहार में राष्ट्रीय चेतना का विकास एवं छात्र आंदोलन

डॉ0 नवनीत कुमार

ब्रिटिश शासन के विरूद्ध आंदोलन में बिहार की भूमिका काफी अग्रणी रहा। भारत की जनता ब्रिटिश शासन को समाप्त करने के लिए राष्ट्रीय आंदोलन शुरू किया। ब्रिटिश शासन के विरोध में सत्याग्रह गांधी जी के द्वारा सर्वप्रथम आंदोलन चम्पारण में शुरू किया गया। सन् 1947 ई0 के भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में बिहार का महत्वपूर्ण योगदान रहा। प्रारंभ में ब्रिटिश शासन के विरूद्ध राष्ट्रीय आंदोलन के उद्देश्यों में अंतर देखा जा सकता है। शुय का संघर्ष असंतोष एवं समस्याओं का परिणाम था। 1857 ई0 के विद्रोह को छोड़कर सभी प्रयासों का प्रभाव बहुत ही क्षेत्रों में रहा। 1857 ई0 के विद्रोह का प्रभाव उत्तरी एवं मध्य भारत तक ही सीमित रहा। इस विद्रोह का उद्देश्य अंग्रेजी सत्ता के स्थान पर पुराने नवाब जमींदार और अन्य प्रभाव को पुनः बहाल करना था। राष्ट्रीय आंदोलन का मुख्य लक्ष्य ब्रिटिश शासन से भारत को स्वतंत्र कराना था और साथ–ही–साथ जनता के प्रतिनिधियों के हाथ में सत्ता को सौंपना था। इस आंदोलन का मुख्य कार्य शिक्षित और मध्यम वर्गो के हाथों से होता था। इस आंदोलन में राष्ट्रीय चेतना की भावना स्पष्ट रूप से झलकती थी और इससे यह भी पता चलता था कि भारत की जनता में एकता बरकरार है। 19 वीं शताब्दी के बाद नई राष्ट्रीयता की चेतना समस्त भारत में जगी। इस राष्ट्रीय भावना में बिहार भी अपनी भूमिका कायम रखी। निश्चित रूप से बिहार की इस भूमिका को निधार्रित करने में यहां की छात्र राजनीति एवं उनकी सक्रियता का बहुत बड़ा योगदान था।